कु : समिक्षा गजानन म्हात्रे.
रोल नं :- A_3-36
T.Y.B.A
पी.एन.पी. आर्टस, कॉमर्स, सायन्स.
कॉलेज अलिबाग वेश्वी.

विषय : प्रूफ संशोधन का अर्थ स्वरूप और गुण.

प्रूफ संशोधन का अर्थ स्वरूप और गुण

नाम :- आशिक्षा गजानन भगत
रोल नं : A3-36
T. Y. B. A
पी. एन पी. आर्ट्स कॉमर्स, सायन्स, कॉलेज अलिबाग वेश्वी
विषय :- प्रूफ संशोधन का अर्थ, स्वरूप और गुण

प्रूफ संशोधन का अर्थ स्वरूप और गुण.

अनुक्रमणिका

अ.क्रं	घटक के नाम	पान क्रं	अंक
1)	प्रस्तावना	3	
2)	जानकारी	4,5,6	
3)	प्रूफ संशोधन के गुण	7.	
4)	प्रूफ संशोधन के कर्तव्य	8	
5)	प्रूफ संशोधन का स्वरूप	9,10	
6)			

प्रस्तावना :-

प्रूफ संशोधन मुद्रण प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है। कम्पोज की हुई सामग्री में अनेक त्रुटियां रह जाती है। कम्पोज की हुई जो सामग्री में जो त्रुटियां होती है उनको चिंहित करके, सही कर देने का कार्य प्रूफ संशोधक या प्रूफ रीडर कहा जाता है। प्रूफ शोधन वह प्रक्रिया है जो आपकी पांडुलिपी का संपादन किए जाने के बाद आती है। प्रूफ-शोधन प्रक्रिया के दौरान, लेखक (या कोई भी जो प्रूफ-शोधन, या कहानी) से कहीं कई अन्य त्रुटियों की खोज नहीं कर रहा है- इनको व्यवस्था संपादन प्रक्रिया के दौरान संपादक के द्वारा की जा चुकी है।

शोधन का मतलब हिंदी में शोधन संस्कृत [संज्ञा पुल्लिंग] 1) शुद्धि करने की क्रिया या भाव 2) अशुद्धि, त्रुटि, भूल आदि को दूर करके दुरुस्त करना सुधारना, संशोधन, (करेक्शन) 3) खोज कार्य, अन्वेषण, ऋण देन आदि चुकाने की क्रिया, परीक्षण, जाँच, निरीक्षण [विशेषण] साफ करने वाला; शुद्धिकर्ता।

प्रूफ रिडर का काम पुस्तक में परिवर्तन करना नहीं है। केवल सुझाव देने है कि पुस्तक में क्या कमियां है और उनका निराकरण कैसे किया जाए ... पुस्तक का नाम लेखक का नाम साफ दिख रहा है या नहीं तो सुझाना है कि इस कमी का निवारण कैसे हो, कवर पर के चित्र, अंकन और रंगो पर भी सुझाव दिया जा सकता है।

• जानकारी :-

प्रूफ शोधन वह प्रक्रिया है जो आपकी पांडुलिपी का संपादन किए जाने के बाद आती है। प्रूफ-शोधन प्रक्रिया के दौरान, लेखक (यह कोई भी जो प्रूफ-शोधन करता है) वह कथानक की दुर्बलता, विच्छिन्नता, या कहानी से जुड़ी हुई अन्य त्रुटियों की खोज नहीं कर रहा है, इनकी व्यवस्था संपादन प्रक्रिया के दौरान संपादक के द्वारा की जा चुकी है।

पुस्तक की भाषा के बारे में भी सुझाव तो दिया जा सकता है। बात की जा सकती है। यदि लेखक की क्षमता वही हो, तो कोई क्या करे। पर गंभीर हो तो रीडर कायापलट भी करवाने की सोच सकता है।

प्रूफ रिडर का काम पुस्तक में परिवर्तन करना नहीं है, केवल सुझाव देने हैं। कि पुस्तक में क्या कमिया है और उनका निराकरण कैसे किया जाए। अच्छे प्रूफ रिडर पुस्तक उत्कृष्टता बढाने के लिए भी सुझाव दे सकते हैं।

अतः कम्पोज की हुई सामग्री में जो त्रुटियां होती है उनको चिह्नित करके, सही कर देने का कार्य प्रूफ संशोधन कार्य करने वाले कुछ विशिष्ट व्यक्ति विशेष रूप से यह कार्य स्वतंत्र रूप से भी करते है।

कंपोजिंग के उपरान्त यह देखना कि जो कंपोज किया गया है वह शुद्ध है या नहीं, यदि नहीं, तो कहा क्या अशुद्धि रह गई है और क्या शुद्धि आवश्यक है, इसे प्रूफ- संशोधन कहते हैं। प्रूफ संशोधन का कार्य इस दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यदि प्रूफ ठीक नहीं पढ़ा गया और न ठीक से नहीं लगे तो अशुद्धियां रह जाएगी। अखबार में नाम और काम दोनों भी जल्दी-जल्दी ताबड़तोड़ करना होता है। इसलिए संपादकीय विभाग बारीकी से प्रूफ- संशोधन कार्य नहीं कर पाता और अशुद्धियां छप जाती है। अखबार के मुद्रण में अशुद्धियां जाना उसकी प्रतिष्ठा को गिराने वाला होता है। कभी-कभी तो इससे अनर्थ ही हो जाता है, क्योंकि एक शब्द रह जाने पर अर्थ ही बदल जा सकता है। ऐसी अवस्था में संपादक को उसके लिए खेद प्रकाश को बाध्य होना पड़ता है।

सामान्यतः कंपोज की गई सामग्री-टाइप मैटर-पर स्याही लगाकर प्रूफ- मशीन की सहायता से सादे कागज पर प्रूफ उतारा जाता है और कंपोजीटर द्वारा लेकर कंपोजिंग में प्रिंटर से। मूल पांडुलिपि से मिलाकर यह देखा जाता है कि कंपोज कहां तक सही हुआ है। वह मोटे तौर पर प्रूफ को दायीं और बायीं ओर दो भागों में (मन में ही) बांट लेता है और बायीं ओर के आधे भाग की अशुद्धियां प्रूफ के बायीं ओर के हाशिये पर तथा दायीं ओर के आधे भाग की अशुद्धियां दायीं ओर के हाशिये पर अंकित की जाती है। यदि एक ही पंक्ति में अधिक अशुद्धियां हो तो उनके स्थान पर [illegible] संशोधन [illegible]

हाशीये पर दोनों ओर क्रमश: बायीं ओर से दायीं ओर को लगाये जाते हैं। हर संकेत के बाद एक आड़ी पाई भी लगाते जाना होता है।

प्रूफ-संशोधन के लिए प्रूफ में कहां गलती है। यह संकेत तो मैटर में देना होता है और उसके स्थान पर क्या शुद्ध वर्ण या शब्द लगाना है, यह हाशीये में लिखना होता है। करेक्शन लगाने वाला प्रूफ को ठीक से समझ सके, इसके लिए आवश्यक है कि प्रूफ-संशोधन स्याही से मैटर और हाशीये पर उपयुक्त चिन्हों के साथ साफ-साफ संकेतित होने चाहिए।

प्रूफ ठीक से पढ़ा जा सके, इसके लिए आवश्यक है, कि प्रूफ साफ उठा हुआ हो इसके लिए समाचारपत्र प्रेस में प्रूफ उठाने के लिए अच्छी मशीन होती है। प्रूफ पढ़ने का काम प्रूफ रीडर करता है। और उसके साथ एक कापी होल्डर मूल पांडुलिपी ऊंचा बोलकर पढ़ता जाता है। उसके अनुसार कंपोज मैटर में मिलान करता जाता है। जहाँ अशुद्धी होती है, वहा वह कंपोज मैटर में उपयुक्त चिन्ह लगाकर हाशीये पर शुद्ध पाठ का संकेत करता जाता है। (यहां ध्यान देने की बात यह है कि मूल पांडुलिपी में अशुद्धि-संशोधन हस्तलिखीत पाठ में मूल शब्दों या वाक्यों के वर्जन के साथ ही किया जाता है जब कि प्रूफ संशोधन में अशुद्धि पर चिन्ह लगाकर हाशीये की खाली जगह पर अशुद्धी से शुद्धी की जाती है।

• प्रूफ संशोधन के गुण :-

प्रूफ संशोधन मुद्रण प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। कम्पोज की हुई सामग्री में अनेक त्रुटियाँ रह जाती है। अतः कम्पोज की हुई सामग्री मे जो त्रुटियाँ होती है उनको चिंहित करके, सही कर देने का कार्य प्रूफ संशोधक या प्रूफ रीडर करता जाता है।

प्रूफ संशोधन के गुण में सबसे पहले कम सूची का ध्यान और पृष्ठ संख्या पर विशेष ध्यान होना चाहिए। पुस्तक की उत्कृष्टता बढाने के लिए हर नई रचना नए पृष्ठ पर शुरू होनी चाहिए कुछ लेखक नई रचना दायीं पृष्ठ से ही शुरू करना पसंद करते है, ऐसे में पृष्ठ बढते है और लागत भी, जिससे पुस्तक की कीमत बढ जाती है।

खर्च को कंजूसी की हद तक कम करने के लिए रचनाए आधी पृष्ठ पर भी शुरू की जाती है, जो किसी भी तरह से तर्क संगत नहीं लगता। पर रचनाकार के पास रुकने का समय नहीं है और न ही पैसों की उम्मीद, मजबूरी ऐसा भी करवाती है। जैसे घर के बुजुर्ग मृत्युशय्या पर है, और उनकी तमन्ना है कि पोते की पुस्तक देखकर जाएं, जो समय ले रही है। यह मजबूरी ही है।

विधायिका सभा में किसी विधेयक में परिवर्तन, सुधार अथवा उसे निर्दोष बनाने की प्रक्रिया को संशोधन (Amendment) कहते है।

• प्रूफ संशोधन के कर्तव्य :-

प्रूफ रीडर का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण होने के कारण प्रूफ रीडर ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसे सम्बंधित भाषा की अच्छी जानकारी हो और शुद्धता-अशुद्धता का विवेक भी हो। वह ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो प्रूफ रीडिंग कि जिम्मेदारी भली-भांति समझता हो। इसका अच्छे लेखक और संपादक अपनी रचना का अंतिम प्रूफ रीडर को पांडुलिपी में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए। यदि उसे कहीं लगे कि अमुक स्थान पर अमुक शब्द या वाक्य या संदर्भ ठीक नहीं है तो उसे इसकी ओर लेखक का ध्यान आकृष्ट करना चाहिए। इसके लिए वह सम्बंधित स्थल पर चिन्ह लगाकर हाशिये में तीन प्रश्न चिन्ह लगा देता है।

अच्छे प्रूफ के लिए आवश्यक है कि वह प्रूफ को ध्यान से सही पढ़े, प्रूफ को तेजी से पढ़े और प्रूफ को सफाई से पढ़े यानी चारो ओर लाइने खींच कर प्रूफ को रंग ही न दे। इससे प्रूफ देख कर अशुद्धियां दूर करने में कंपोजीटर को बहुत असुविधा होती है और अकारण समय नष्ट होता है।

अच्छे रीडर को भाषा एवं विषय के सकोल ज्ञान के अतिरिक्त मुद्रण-सम्बन्धी दो-चार अच्छी पुस्तकों का भी अध्ययन करना चाहिए। इसे थोड़ा बहुत व्याकरण के अलावा कंपोजिंग तथा मुद्रण कार्य का होना चाहिए। प्रूफ का सामान्य ज्ञान भी पर्याप्त अच्छा रहना चाहिए अन्यथा वह विविध विषयों की पुस्तकों आदि के प्रूफ पढ़ने में मूल पाठ से मिलान तो अच्छा कर लेगा, किंतु कुशल प्रूफ संशोधक की भांति लेखक की त्रुटियों की ओर संकेत नहीं कर पाएगा।

• प्रूफ संशोधन का स्वरूप :-

प्रूफ संशोधन मुद्रण प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। कम्पोज की हुई सामग्री में अनेक त्रुटियां रह जाती है। अत: कम्पोज की हुई सामग्री में जो त्रुटियां होती है उनको चिह्नित करके, सही कर देने का कार्य प्रूफ संशोधन या प्रूफ रीडर कहा जाता है। किसी भी प्रकाशन संस्थान में प्रूफ रीडर को बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। इसे भाषा, व्याकरण तथा विरामादि चिन्हों को यथास्थान प्रयोग करने का परिपक्व ज्ञान होना आवश्यक होता है। प्रत्येक पढ़ा-लिखा व्यक्ति प्रूफ रीडिंग अर्थात् प्रूफ संशोधन का काम नहीं कर सकता। प्रूफ संशोधन कार्य करने वाले कुछ विशिष्ट व्यक्ति विशेष रूप से यह कार्य स्वतंत्र रूप से भी करते है। साधारणतः बड़ी प्रकाशन संस्थाओं में जहां निरंतर चलता रहता है, स्थायी रूप से प्रूफ संशोधक नियुक्त रहते है।

अंतिम रूप से मुद्रित पुस्तक या समाचार-पत्र तथा पत्रिकाओं में आदि पाठक त्रुटियां देखता है। (जो किसी भी प्रकार की हो सकती है, जैसे तथ्यात्मक वर्तनी सम्बंधित वर्तनी, भावात्मक) तो पाठक को बड़ी झुंझलाहट होती है। बहुत-सी त्रुटियां ऐसी भी रह जाती है जिन्हें पाठक भ्रम में पड़कर या अज्ञानवश शुद्ध मान लेता है और यदि वह स्वयं भी किसी शब्द की वर्तनी का प्रयोग को सही जानता हो तो भी छपी हुई अशुद्धता को ही प्रामाणिक मानकर स्वयं भी गलत लिखने लगता है।

समाचार-पत्र में में प्रूफ संशोधन विभाग होता है वह प्रूफ संशोधक एक, दो या अधिक भी हो सकते है। सम्पादक या उप-सम्पादक के द्वारा समाचार,

लेख तथा अन्य प्रकार की सामग्री को लिखकर और टाइप करवाकर कम्पोजिंग विभाग में भेज दिया जाता है। कम्पोज होने के बाद उसका प्रूफ संशोधक के पास जाता है जिसे वह उसकी कॉपी (पाण्डुलिपि) से मिलाकर गलतियों को चिंहित करके शुद्ध करता है और उन्हें ठीक करने के लिये पुन: कम्पोजिंग विभाग में भेज दिया जाता है। वहां वह ठीक की जाती है तथा उनका मिलान किसी तृतीय व्यक्ति द्वारा कि जाती है।

समाचार-पत्र में अशुद्धियों के लिये जितना सम्पादकीय विभाग उत्तरदायी है, उससे कम प्रूफ संशोधन विभाग भी नहीं है। प्रूफ संशोधकों की इतनी बडी जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए प्रेस आयोग ने अपने प्रतिवेदन में उन्हें पत्रकार श्रेणी में रखने का सुझाव दिया, लेकिन प्रेस मालिकों ने उसके इस प्रतिवेदन को ठुकरा दिया। अखिल भारतीय श्रमजीवी पत्रकार संघ और उसकी अनेक शाखाओं ने सर्वोच्च न्यायालय का द्वार खटखटाया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सर्वोच्च न्यायालय ने प्रूफ संशोधकों को पत्रकार श्रेणी मान्य कर लिया। कुशल प्रूफ संशोधक मात्र कॉपी को देखकर उसकी मक्खी मारने का ही काम करते नहीं, वह सामग्री के विचारों, तथ्यों और भाषा के क्षेत्र में संपादकीय कार्य पर भी कड़ी दृष्टि रखते हैं। वह मूल कॉपी में यदि टंकण की भी कोई गलती होती है तो वह उसको भी सुधार देते हैं। यह कहना तो उचित ही है कि प्रूफ संशोधन का कार्य बहुत रचनात्मकता पूर्वक करना आवश्यक है।